इकाई 14 महाकवि कालिदास का प्रभाव (पश्चिमी साहित्य और रंगमंच पर)

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 महाकवि कालिदास एवं उनका साहित्य

14.3 महाकवि कालिदास का प्रभाव पश्चिमी साहित्य पर

14.4. महाकवि कालिदास का प्रभाव पश्चिमी रङ्गमञ्च पर

14.5 सारांश

14.6 शब्दावली

14.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- महाकवि कालिदास एवं उनके साहित्य से परिचित हो जायेंगे।
- महाकवि कालिदास का प्रभाव पश्चिमी साहित्य एवं विद्वानों पर किस प्रकार हुआ? उससे परिचित हो जायेंगे।
- महाकवि कालिदास के साहित्य का पश्चिमी रङ्गमञ्च पर प्रभाव को जान पायेंगे।

14.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि, व्यास आदि ऋषि कवियों की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने वाले कालजयी रचनाकारों में 'कालिदास' 'कविकुलचूड़ामणि' के रूप में विश्वविख्यात है। कवि को मनीषी, परिभू, स्वयम्भू, प्रजापति आदि उपाधियों से अभिमण्डित करने वाली भारतीय काव्य परम्परा में कालिदास को महज एक कवि तथा नाटककार के रूप में मूल्यांकित नहीं किया जा सकता है बल्कि इस महान रचनाकार ने अपने सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा वैवध्यपूर्ण रचना संसार से भारत तथा उसमें रची–बसी भारतीय संस्कृति को जो राष्ट्रीय पहचान देने का अद्भुत कार्य किया है, उसके कारण आधुनिक समीक्षाकारों ने कालिदास को राष्ट्धर्मी काव्य द्वारा समस्त भारत को अखण्ड राष्ट्र की अवधारणा से जोड़ा है। उत्तर से दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक वैविध्यपूर्ण भारत की सामाजिक संस्कृति कालिदास के साहित्य में एकता के सूत्र में ग्रथित नजर आती है। आज भारतीयों के साहित्य और संस्कृति को जो विदेशों में सम्मान प्राप्त है, उसका बहुत बड़ा श्रेय महाकवि कालिदास को जाता है। कालिदास साहित्य के प्रशंसक जर्मन के प्रसिद्ध कवि विद्वान हैरडर ने कहा है कि भारत के धर्मग्रन्थों के अध्ययन से हमें भारतीयता का इतना समग्र और परिपक्व ज्ञान नहीं होता जितना कि सरस, रोचक तथा हृदयाकर्षक कालिदास की साहित्यिक

कृतियों में प्राप्त होता है।

इकाई–14 में महाकवि कालिदास का प्रभाव (पश्चिमी साहित्य और रङ्गमञ्च पर) खण्ड–3 के अन्तर्गत आता है। इसके अन्तर्गत कालिदास के साहित्य का पश्चिमी साहित्य एवं रङ्गमञ्च पर प्रभाव को स्पष्ट किया जायेगा। क्योंकि कालिदास की कृतियों में काव्यप्रतिभा का एक विशेष सौन्दर्य प्रफुल्लित हुआ है। कालिदास की कृतियों के अध्ययन के माध्यम से भारत के सहृदयों ने काव्यास्वादन के स्वर्णिम क्षेत्रों को ढूंढ़ निकाला था। कालिदास की कविता के सौन्दर्य तत्त्वों को तलाशते समय हमारे सहृदय चिन्तक ने ध्वनिमार्ग से आगे बढ़कर रसास्वाद तक पहुँच गये थे। जर्मन कवि गेटे की प्रशस्ति से कालिदास की कीर्ति यूरोप में चारों ओर फैल गयी।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं में अनुवाद होने लगे तथा इसके साथ ही यूरोप में संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन की नई दिशाएँ उद्घाटित होने लगी। विदेशों में भारतीय काव्य, नाटक, धर्म, दर्शन, तुलनात्मक ज्ञान–विज्ञान की नवीन शाखओं के रूप में पढ़ाए जाने लगे।

अतः इस इकाई में महाकवि कालिदास की कृतियाँ अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूत, ऋतुसंहारम् की विषयवस्तु तथा इन कृतियों से प्रभावित जर्मन, फ्रेंच, लैटिन, इटली, डेनमार्क, स्वीडन, रूस आज आदि अनेक पाश्चात्य देशों के साहित्य एवं विद्वान विशेषकर गेटे, चेजी, राइडर, हम्बोल्ड, जोन्स, मोनियर विलियम्स, हर्डर फारेस्टर, गोयथे, श्लेगल, ओल्डनबर्ग इत्यादि कालिदास के साहित्य से इस प्रकार प्रभावित हुए। इसको स्पष्ट किया जायेगा। इसके साथ ही पश्चिमी रङ्गमञ्च विशेषकर जर्मनी के म्यूनिक थियेटर, अमेरिका के कैलिफ्रोर्निया में किस प्रकार गमञ्चन हुआ इसको स्पष्ट किया जायेगा।

14.2 महाकवि कालिदास एवं उनका साहित्य

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि है। इनकी ख्याति केवल भारत तक ही सीमित न रह कर विदेशों में भी व्याप्त हो गई। प्रो॰ लैसन महोदय ने इन्हें–'The brightest star in the firmament of Sanskrit Literature' इस उपाधि से विभूषित किया है। परन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि ऐसे महान कवि के व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ भी प्रामाणिक रूप से ज्ञात नहीं है। महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में बाणभट्ट के समान, अपने जीवन के विषय में कोई संकेत नहीं दिया है। परवर्ती कवियों ने भी अपने ग्रन्थों में उनके जीवन के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया है। कवि कालिदास के जीवन से सम्बद्ध कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित है। जिनके आधार पर कालिदास के जीवनवृत्त का कुछ अनुमान लगाया जाता है। एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास बाल्यावस्था में अत्यन्त मूर्ख थे। विदुषी विद्योत्तमा नामक राजकुमारी के साथ उनका विवाह हो गया। किन्तु विवाह के पश्चात् पत्नी द्वारा तिरस्कृत होने पर कालिदास ने काली देवी की उपासना की और विद्या का वरदान प्राप्त किया। कालिदास ने घर आकर दरवाजा खटखटाया और कहा– '**अनावृतकपाटं द्वारं देहि**' (दरवाजा खोला)। पत्नी ने प्रश्न किया–'**अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः**' (वाणी में क्या कुछ विशेषता आ गई है?)। कालिदास ने पत्नी के इस वाक्य से अत्यन्त प्रभावित होकर इसके तीनों शब्दों से प्रारम्भ होने वाले तीन अलग–अलग काव्यों की रचना की–'**अस्ति**' से कुमारसम्भव, '**कश्चित्**' से मेघदूत और '**वाक्**' से रघुवंश।

एक लोक प्रचलित धारणा के अनुसार कालिदास प्रथम शताब्दी ई. पू. के विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों में से एक थे। एक अन्य मान्यता के अनुसार वे राजा भोज के

राजकवि थे। भोजप्रबन्ध में राजा भोज और कालिदास की मित्रता का उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि वे किसी राजा के सम्पर्क में अवश्य रहे थे। कालिदास के ग्रन्थों से यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने भारत की विस्तृत यात्रा की थी। वे वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, संगीत, ज्योतिष, व्याकरण, छन्द शास्त्र, काव्यशास्त्र आदि विविध विद्याओं के गम्भीर अध्येता थे। सम्भवतः 'कालिदास' उनका उपनाम था। कालिदास का जन्मस्थान और जन्मकाल विवाद के विषय हैं। पर अब इतना निश्चित रूप से मान लिया गया है कि वे उज्जयिनी के निवासी थे या अधिक समय तक उज्जयिनी उनकी कर्मभूमि रही थी। कालिदास को अधिकांश विद्वान् ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी का कवि मानते है। उनकी भाषा–शैली, अपाणिनीय प्रयोग, वैदिक शब्दावली का प्रयोग, वैदिक कर्मकाण्ड का समर्थन और उनका अश्वघोष पर प्रभाव आदि इसके प्रमुख कारण स्वीकार किये जाते हैं।

महाकवि कालिदास की सात रचनाएँ प्रसिद्ध है–

1. **नाटक–**
   - अभिज्ञानशाकुन्तल
   - विक्रमोर्वशीय
   - मालविकाग्निमित्र
2. **महाकाव्य–**
   - रघुवंश
   - कुमारसम्भव
3. **गीतिकाव्य–**
   - मेघदूत
   - ऋतुसंहार।

कुमारसंभव–कुमारसम्भव के सत्तरह सर्गों में शिव–पार्वती के विवाह, कार्तिकेय के जन्म तथा तारकासुर के वध की कथा का वर्णन है।

रघुवंश–रघुवंश महाकाव्य में मनु से लेकर सूर्यवंशी इकत्तीस राजाओं के जीवन का विशद वर्णन उन्नीस सर्गों में किया गया है। इनमें दिलीप, रघु, अज, दशरथ और राम के जीवन का विस्तृत चित्रण है। **मालविकाग्निमित्रम**–मालविकाग्निमित्रम पाँच अंकों का एक नाटक है। नाटक की अपेक्षाकृत अपरिपक्व शैली के कारण यह कालिदास का प्रथम नाटक प्रतीत होता है। इसमें शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र और मालविका के प्रणय का वर्णन है। **विक्रमोर्वशीय**–विक्रमोर्वशीय कालिदास का द्वितीय नाटक है, जिसमें पाँच अंक हैं। इसे एक उपरूपक भेद 'त्रोटक' की संज्ञा दी जाती है। इसमें राजा पुरूरवा और उर्वशी अप्सरा की प्रणयकथा का वर्णन है। **अभिज्ञान शाकुन्तलम्**– कालिदास का तीसरा नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल अत्यधिक रमणीय नाटक है। **काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला** उक्ति काव्य जगत् में सुप्रसिद्ध है। इसमें कुल सात अंक है। इसमें दुष्यन्त और शकुन्तला के प्रणय, वियोग और पुनर्मिलन की सुपरिचित कथा है। **मेघदूत**–संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिम ग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है। इसे गीतिकाव्य का मुकुटमणि कहा जाता है। इसमें धनपति कुबेर के शाप से निर्वासित एक विरही यक्ष की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण है। इसमें कुल 121 पद्य

हैं। इसके दो भाग पूर्वमेघ और उत्तरमेघ है। मेघदूत कालिदास की अन्तःप्रकृति तथा बाह्य प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण का भव्य भण्डार है। इनमें विरह पीड़ित हृदय की मर्मभेदी वेदना है। इसके प्रत्येक पद्य में प्रेम की विह्वलता, विकलता दिखलाई देती है। इसकी शैली प्रौढ़ और परिष्कृत है।

ऋतुसंहार–कालिदास का दूसरा गीतिकाव्य ऋतुसंहार है। इसे कालिदास की प्रथम साहित्यिक कृति माना जाता है, क्योंकि इसके भाव और भाषा अधिक परिष्कृत नहीं है, प्रकृति निरीक्षण भी अपेक्षाकृत सूक्ष्म नहीं है और रचना कौशल में भी न्यूनता दिखाई देती है। ऋतुसंहार सूक्ष्म नहीं है और रचना कौशल में भी न्यूनता दिखाई देती है। ऋतुसंहार में छः सर्ग है और 144 पद्य है। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतुओं का इसमें यथाक्रम वर्णन है। ऋतुसंहार को संस्कृत के एकमात्र ऋतुवर्णन परक काव्य होने का गौरव प्राप्त है।

14.3 महाकवि कालिदास का प्रभाव पश्चिमी साहित्य पर

संस्कृत तथा प्राच्य विद्याओं के अध्ययन की दृष्टि से अठारहवीं शताब्दी की दो घटनाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं इनमें से एक घटना है सन् 1786 में 'डिस्कवरी आफ संस्कृत' की तथा दूसरी घटना है सन् 1789 में 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के अंग्रेजी भाषा में अनुवाद की। सौभाग्य से दोनों महान् कार्य भारत के ज्ञान–वैभव से प्रभावित बंगाल के तत्कालीन अंग्रेज जज सर विलियम जोन्स द्वारा सम्पादित हुए। विलियम जोन्स द्वारा किए गए 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के अनुवाद से कालिदास विदेशों में अत्यन्त लोकप्रिय होते गए। इस अनुवाद कार्य से पूर्व और पश्चिम की कृत्रिम सीमाएँ ध्वस्त होती गई तथा पराधीन राष्ट्र का एक उपेक्षित रचनाकार थोड़े समय में ही विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार बन गया। भारत में कालिदास की कृतियाँ जनमानस में हमेशा सम्मानित व आदर्श रहीं हैं। भारत के जनजीवन की झलक और प्रकृति कालिदास की कृतियों में चिरस्थायी रहती है। भारत की मिट्टी में हर कहीं कालिदास और उनकी कृतियों ने अपनी अलग छाप छोड़ दी है। मैं इधर और एक पहलू के बारे में कहना चाहता हूँ। कालिदास को प्राप्त न होने वाला एक लाभ कालिदास की कृतियों को मिला है–

During 1790 Oriental research in Jena, Weimar and Heidelberg and then at Bonn, Berlin and Tubingen was established. German translations and re-translations of *Sakuntala*, along with the *Laws of Manu* and the *Gita Govinda* were studies in depth and ignited a fervid intensity in receptive German minds.(cited from Oriental Renaissance, 53). Their contact with India's original and universal religion through these works gave them a sense of exaltation. Shakuntala was the first work to attract

Johann Gottfried von Herder (1744-1803) with far reaching effects.

विलियम जोन्स–18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कालिदास की कृतियों ने विदेश भ्रमण शुरु किया था। सन् 1789 में **सर विलियम जोन्स ने 'शाकुन्तल'** एक (अंग्रेजी) गद्यानुवाद **'Shakuntala or the fatal Ring'** के नाम से किया जो कि इंग्लैण्ड में 1790 से 1807 के बीच पूरे यूरोप में 5 बार प्रकाशित हुई। कालिदास की कृतियों की विदेश जययात्रा इससे ही शुरु हुई थी। ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि

भारत की नाट्य प्रतिभा को देखकर यूरोप विस्मय से अभिभूत हो गया। ऐसा कह सकते है कि शेक्सपीयर को देखने वालों को इस मामले में क्यों विस्मय लगेगा। भारत

से उन्होंने इस प्रकार की एक कृति की कामना नहीं की थी। जोन्स ने कालिदास को 'भारत का शेक्सपीयर' कहा था। किन्तु यह ठीक नहीं है। क्योंकि शेक्सपीयर की नाटक प्रतिभा कालिदास को नहीं मिली थी तथा कालिदास की काव्य प्रतिभा शेक्सपीयर को नहीं मिली थी। ऐसा इसलिए कि शेक्सपीयर कवि से भी बढकर नाटककार थे। कालिदास नाटककार से भी बढ़कर कवि थे। इसलिए इस प्रकार का तुलनात्मक कहा भी जाय तब भी भारतीय मानस में यथार्थ से तालमेल नहीं बठैगा। किन्तु इस तुलना से प्रत्येक देश की सम्माननीय उच्च प्रतिभा का परिचय भी मिलता है इसलिए इसे जानना जरुरी है–

In 1789 Sir William Jones opened his career as one of the greatest Indologist by translating Kalidasa's Shakuntala; this translation, re-rendered into German in 1791, profoundly affected Herder and Goethe, and through the Schlegels- the entire Romantic movement.(The Story of Civilization, 391-2).

Jones's Shakuntala inspires other English scholars: Kalidasa's *Abhijnana Shakuntala* was the first Sanskrit drama ever to be translated into a European language by Sir William Jones in 1789 to display an example of India's treasures of Hindu drama to an admiring Europe. Jones actually completed his first translation of Kalidasa's drama in Latin then rendered it word for word into English, without suppressing any material sentence and disengaged it from the stiffness of a foreign idiom and prepared the faithful translation.

(Dorothy Matilda Figueira, *Translating the Orient, The Reception of Sakuntala in Nineteenth Century Europe*, Albany, 1991, 26).

Jones translated Shakuntalam into English as 'Shakuntala or the Fatal Ring', it took only a decade for him to achieve international fame as the translator of Shakuntala, incomparable in Goethe's estimation(quoted in Raymond Schwab, *The Oriental Renaissance:Europe's Discovery of India and the East, 1680-1880,* New York, 1984, 63). In Goethe's correspondence and diaries it is revealed that it held a special place in Goethe's heart.(J.W. von Goethe, *Werke,* Weimar ed.(W.A), Weimar, 1887-1912, cited from Translating the Orient, 215, n 5).

From Jones's translation, others sprang up in German, French, Danish and Italian. Shakuntala became one of the most circulated Indian masterpieces- it was reprinted five times in England between 1790 and 1807 and it was retranslated and published many times throughout Europe.(Oriental Renaissance, 51,53). The century after Jones translated it, Shakuntala appeared in forty-six translations in twelve different languages in Europe.(Translating the Orient, 12).

Jones went on to translate another of Kalidasa's poems, ***Ritusamhara,*** in 1792. He published it in Calcutta as ***'The Seasons', A Descriptive Poem***. (Oriental Renaissance, 31). His English translation of '*Shakuntala',* together with his *Hymns to Narayana,* were studied with fond devotion by**Percy Bysshe Shelly**(1792-1822), **Robert Southey** (1774-1843), **Thomas Moore** (1779-1857), **Alfred Tennyson** (1850-1892) and other nineteenth-century

English poets. (Marie E.D.Meester, *Oriental Influence in the English Literature of the Early Nineteenth Century,* 10). They read his works with admiration and quoted him. Thanks to the influence of Jones' Shakuntala and Hymns to Narayana, Shelly was able to overcome his aesthetic and materialistic tendencies(P.V. De Sola, Sir William Jones and English Literature, 694). चाहे जो भी हो विलियम जोन्स के इस अंग्रेजी अनुवाद से यूरोप कालिदास की ओर ताकने लगा।

स्वामी विवेकानंद ने दुनिया को प्रदान किये गये भारत के कुछ उपहारों का वर्णन इस प्रकार किया है–

In literature, our epics and poems and drama rank as high as those of any language; our Shaguntala (Shakuntala) was summarized by Germany's greatest poet as heaven and earth united (Complete Works, II, 511-12).

Jawaharlal Nehru, The Discovery of India, Calcutta 1946, 1975-

In The Discovery of India, Nehru pointed out that Indian philosophy was felt by Europeans- characteristically ambivalent about the tremendous stimulus of Indian thought on western civilization- to fulfill a need that their own culture has failed to meet (174-5). The name of Kalidasa dominates Indian poetry and epitomizes it brilliantly. The drama, a grand and scholarly epic, a truly classical master piece, which India admires and humanity recognizes. The praise which is saluting the birth of Shakuntala at Ujjayini, has existed over long centuries, bringing illumination from one world to the other since William Jones revealed it to the West.

Arthur W. Ryder, one of Kalidasa's translators, also paid his homage-

The best proof of a poet's greatness is the inability of men to live without him; in other words, his power to win and hold through centuries the love and admiration of his own people, especially when that people has shown itself capable of high intellectual and spiritual achievement.(Arthur W. Ryder, *Kalidasa: Translations of Shakuntala and other works,* Everyman's Library Series, Poetry and The Drama, Ernst Rhys ed., London and New York, 1912)

In his introduction, Ryder wrote that, from the time of Jones' translation of Shakuntala, **as it is testified by new translations and by reprints of the old, there have been many thousands who have read at least one of Kalidasa's works; other thousands have seen it on the stage in Europe and America(it has) a reputation that maintains itself indefinitely and that conquers a new continent** (Everyman's Kalidasa, xviii)

Alexander von Humboldt (1769-1859)-

The German naturalist, traveler and statesman Alexander von Humboldt (1769-1859) Wrote about Indian poetry and observed that Kalidasa, the celebrated author of the Sakoontala, is a masterly describer of the influence which Nature exercises upon the minds of lovers. This great poet flourished at the splendid court of Vikramaditya, and was, therefore, contemporary with Virgil and Horace. Tenderness in the expression of feeling, and richness of creative fancy, have assigned to him his lofty place among the poets of all

nations.(quoted in the Introduction, Monier Williams, Sakoontala: or the Lost Ring, Hertford, 1855, x)

मोनियर विलियम्स–

मोनियर विलियम्स ने 1855 में हर्टफोर्ड में **'शकुन्तला आर द लास्ट रिंग'** के नाम से अनुवाद किया और प्रकाशित किया जिसका दूसरा संस्करण का प्रकाशन 1876 में हुआ। इसे लन्दन में पुनः 1790, 1807 में प्रकाशित किया गया। दिल्ली में 1958 तथा वाराणसी से 1961 में प्रकाशित किया गया। इसकी प्रस्तावना में इन्होंने लिखा है कि–

The most celebrated drama of the great Indian Shakespere. The need felt by the British public for such a translation as I have here offered the most popular of the Indian dramas, in which the customs of the Hindus, their opinions, prejudices, and fables; their religious rites, daily occupations, and amusements are reflected as in a mirror.(Sakoontala, xi-xii).

Monier Williams highly appreciated Kalidasa's use of eleven different varieties of meter in the first thirty-four verses of the poems He chose to employ in his translation both blank verse and rhyming stanzas. (But) He felt his own meters to be prosaic and was aware that he might not have expressed in language as musical as his(Kalidasa's) own. (Sakoontala, xiii).

He humbly acknowledged, I have done all in my power to avoid substituting a fictitious and meager poem of my own and that œno metrical system in English could give any idea of the almost infinite resources(of Sanskrit) (Sakoontala, xii). Moniar Williams Sakoontala was included in Sir John Lubbock's(1824-1913) list of world's one hundred best titles under the name Abigyan Sakuntala. (G.G.Sengupta, Indology and Its Eminent Western Savants, Calcutta, 1996, 84-5).

जार्ज फ़ॉरेस्टर–

फ़ॉरेस्टर के अनुवाद को जर्मनी के मध्यवर्ग के बीच बहुत ख्याति मिली थी। उनमें से कई लोग भारतीय विद्या की ओर उन्मुख हो गए। इस प्रकार इसे एक चमत्कार के रूप में देखा गया जो चमत्कार की भूमि से आया था।

George Forster(1754-1794) published his very popular English translation of Shakuntala from Jones' English version in 1791. He sent it to Herder on May 17th, 1791(Oriental Renaissance, 57-8). Herder wrote to Forster that Shakuntala was a masterpiece that appears once every two thousand years (Translating the Orient, 13).

He also wrote the preface to Forster's second edition. Herder was enchanted by Shakuntala and wanted others to experience his recognition of it as a new model in dramatic theory. He wrote a lengthy essay about Shakuntala, challenging the Aristotelian dramatic theory by which all dramatic works were evaluated upto that time. Herder also reevaluated his conceptions about Indian art in light of Shakuntala and concluded that the Greek model was not the absolute model in art.(*Samtliche Werke,* cited from *Translating the Orient*, 13-14). Significantly Herder joined the historic Enlightenment and Romantic Movements in Germany. जोन्स का अंग्रेजी अनुवाद ही इनके जर्मन अनुवाद का आधार था।

हरडर–

हरडर ने फॉरेस्टर के अनुवाद का सुधार करके 1793 में शाकुन्तलम् के अनुवाद का पुनः प्रकाशन किया था। इस अनुवाद के पढ़ने के बाद उन्हें ज्ञात हुआ कि संस्कृत विद्वान पेरिस में रहते हैं। वे उधर गए और संस्कृत सीखकर वापस गए तथा जर्मनी में असीम विद्या (Indology) की नींव उन्होंने ही डाली। Herder, Goethe (1749-1832) and Schiller (1759-1805)- all ardent admirers of Kalidasa- shared Forster's great fervor for Shakuntala. Bhimsen Gupta's *The Glassy Essence:*

A Study of E.M. Forster, L.H.Meyers and Aldous Huxley in Relation to Indian Thought (Kurukshetra, 1976) gives interesting details. Goethe's adaptation of of *Shakuntala* for the German stage was also the source for his prologue in the Theatre in *Faust*. This detail was revealed by the poet Heinrich Heine (1797-1856) (Oriental Renaissance, 60). Heine's spiritual home was on the banks of the Ganges according to Danish literary critic George Brandes. He was inspired by his passionate interest in Indian literature and modeled three sonnets after Shakuntala and sent them to Ernst Friedrich Ludwig Robert.(Oriental Renaissance, 60). इस प्रकार हरडर और गोपथे के द्वारा इसका स्वागत किया गया तथा हरडर ने इस पर एक लम्बा लेख पत्र के रूप में लिखा। गोएथे ने फारस्टर को अनुवाद पढ़ने के पश्चात् अपनी प्रसिद्ध कविताओं की रचना की। इस प्रकार यूरोपीय लोगों ने इस नाटक को अपने साहित्य में महान स्थान दिया एवं इसे नाटक के आधार के रूप में स्वीकार कर अपने ग्रन्थों, लेखों तथा काव्यों की रचना की। साथ ही साथ गोएथे ने शकुन्तला की उत्साह पूर्वक प्रशंसा की। **राष्ट्रकवि गेटे–** जर्मन राष्ट्रकवि '**गेटे**' ने शाकुन्तल का अनुवाद पढ़ा तो वह हर्षातिरेक से झूमने लगा। अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए गेटे ने 'शाकुन्तल' नाटक की प्रशस्ति में लिखा था कि–

वासन्तं कुसुम फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यत्।
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।।

एकीभूतमभूतपूर्णमथवा स्वर्लोकभूलोकयोर्।
ऐश्वर्यं यदि वाच्छसि प्रियसखे! शाकुन्तल सेव्यताम्।।

अर्थात् यदि कोई वसन्तऋतु के कुसुम और ग्रीष्म ऋतु के फल एक साथ प्राप्त करना चाहे, यदि कोई मन को अपनी ओर सम्मोहित करना चाहे, यदि कोई पृथ्वी और स्वर्ग को एक ही स्थल पर देखना चाहे तो एक बार अवश्य शाकुन्तल नाटक को पढ़ना चाहिए।

Antoine-Leonard de Chezy(1774-1832)-

French Sanskrit scholar, had read Jones version of Shakuntala which made him exclaim, I shall never forget the impression it made on me(Oriental Renaissance, 299).

Chezy was the first to fully and directly translate*Shakuntala* from a Bengali version into French. He published it in 1830 with ample notes that included an explanation of the meaning of the term Vedas, that proved useful to many writers after him. (Oriental Renaissance, 93, 299).

Antoine-leonard de chezyने लिखा कि जिसमें वे कहते है कि प्रथम बार जब हमने इस गहन कार्य के विषय में जान पाया उस समय इसने मेरे अन्दर एक ऐसा उत्साह उत्तेजित किया और इतना आर्कषित किया की मैंने कभी भी इसका अध्ययन नहीं छोड़ा तथा इसे कम से कम किसी भी प्रकार से जर्मन पर अपनाने के असम्भव कार्य के लिए स्वयं को प्रेरित किया। इस प्रकार जर्मन सम्पादक चेजी ने फ्रेंच भाषा में शाकुन्तल का अनुवाद किया था। सन् 1814 में पेरिस विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम संस्कृत विभाग की स्थापना हुई तो चेजी ही संस्कृत के पहले प्रोफेसर बनाये गये। इसके बाद सन् 1855 में फ्रेडरिक रूकार्ट ने संस्कृत से शाकुन्तल का जर्मन अनुवाद तैयार किया था, जिससे वे प्रसिद्ध हो गये। One of them was the novelist Theophile Gautier, who conveyed and diffused the oriental presence through his poetry which had influenced Mallarme and Victor Hugo. His numerous tales made ample use of Chezy's notes. (Oriental Renaissance, 413).

- Chezy also included Goethe's famous lines as an epigraph to the work, which prompted Goethe to write to Chezy that ***Shakuntala*** was a star that makes the night more agreeable than the day. (Oriental Renaissance, 61).
- Chezy's love for *Shakuntala* also made him exclaim, Oh most happy Forster! How I envy him (Oriental Renaissance, 59).
- Chezy's ***Shakuntala*** singularly nourished all France, which had a strong infatuation for Hindu literature in the early 19th century.

Friedrich von Schlegel (1772-1829)-

German Indologist, was also greatly inspired by George Forster's translation of Shakuntala. Sclegel's work in 1808 established the contributions in antiquity of the language and wisdom of India ***(Uber die Sprache Und Weisheit der Indier: Ein Beitrag zur Begrundung der Altertumskunde).*** It was a primary publication of nineteenth-century European Indology influenced by the Romantic Movement its scholarly translations of extracts from the sacred Sanskrit texts forever inspired Germans who refer to the Wisdom of India.(Influence, 20).

A close friend of Friedrich Schlegel, the poet Novalist was inspired by ***Shakuntala.*** The death in her early youth of his fiance Sophie von Kuhn, became merged in his mind with the German perception of India as the childhood of humanity and occasioned his romantic mystery poem about her. In this work, he united the values of the departed young soul of Sophie with the values of Hinduism, reflecting Maier's definition of Sanskrit poetry as ***Morgentraume unseres Geschlechtes,*** the childhood dream of our species. (Oriental Renaissance, 207).

14.4. महाकवि कालिदास का प्रभाव पश्चिमी रङ्गमञ्च पर

पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति की ओर आकृष्ट करने का श्रेय कालिदास के शाकुन्तल को ही है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्राफेसर ए. मैकडानल का कहना है कि यूरोप के नाटकों में सबसे प्रसिद्ध नाटक फ़ास्ट की भूमिका भी जर्मन कवि गेटे ने कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुन्तलम् के आधार पर ही लिखी थी।

पाश्चात्य साहित्य समीक्षक **एमर्सन** ने कालिदास की कृतियों को पढ़कर कवि और काव्य की परिभाषा ही दे डाली– कवि उद्धार करने वाले देव होते हैं। वे हमारी भावनाओं में प्रवेश करके उन्हें परिष्कृत करते हुए समाज को उठाते हैं, गिराते नहीं।

शीलर ने भी गोएथे को एक पत्र में लिखा है कि शाकुन्तल का नाट्यशाला में उपयोग करने के लिए विचार कर रहे थे किन्तु उन्होंने इस विचार को त्याग दिया है, क्योंकि मंच के लिए यह बहुत ही नाजुक है। फिर भी इस नाटक के मञ्चन के लिए यूरोप में कई प्रयास किये गये तथा जर्मन रंगशालाओं में इस नाटक के कई अनुवादों का मञ्चन किया गया है।

19 वीं शताब्दी के पहले ही कालिदास के साहित्य ने दूसरे देश के लोगों का रसास्वादन प्रदान करने के लिए समर्पित हो गया था। सन् 1921 में प्रसिद्ध भारतीय विद्या विशेषज्ञ ए. हिल्ब्रेंट ने कालिदास के बारे में एक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखा जिसका शीर्षक An attempt at a Literay Appraisal था।

पेरिस में अभिज्ञानशाकुन्तलम को नृत्य नाटिका के रूप में मञ्च पर लाया गया और शाकुन्तलम को प्रोत्साहित किया गया–By the late eighteenth century, French writers had also acquired intimate knowledge of Indian literature. **Jean-Jacques Ampere(the scientist)predicted that Indian thought would introduce another Renaissance in his own time.**(Vivekananda Kendra Patrika, Aug,1977, 314).

Alphonse de Lamartine (1790-1869) was penning reliable prose about the original Hindu epics along with translations of Indian poetry and drama. According to the Sanskrit scholar, Louis Renou, the three principal poets of the Romantic period in France, Lamartine, Alfred-**Victor de Vigny** (1797-1863) and **Victor Hugo**(1802-1885) were all greatly influencedby the Upanishads and other Indian lore. Their enthusiasm and wonder increased when they became acquainted with translations of the great Sanskrit works, such as Kalidasa's Shakuntala, which captivated so many writers of significance. Lamartine, who studied the rules of Sanskrit dramaturgy available at the time as well as the moral goals of the play, lauded it variously. He wrote that Shakuntala had within it the threefold genius of Homer, Theocritus, and Tasso combined in a single poem (Alphonse de Lamartine, *Cours familier de litterature,* cited in Oriental Renaissance, 61).

In 1800 the accumulated Indian manuscripts languishing in the Bibliotheque Nationale began to be prepared for inventory. The journal *Decade Philosophique* published extracts from Jones translation of ***Abhijnana Shakuntalam.***(Francois Joseph Picavet, *Les ideologues*, cited from Oriental Renaissance, 55).

In 1818, Bruguiere de Sorsum, characterized by Baldensperger as a well-read administrator and former adviser to Jerome in Westphalia (Oriental Renaissance, 79) changed his career and became a writer. His love for poetry earlier brought him in contactwith ***Shakuntala***, which he had translated from Jones English version in 1803. He also gathered together ideas from Forster's German translation of *Shakuntala* that he had discovered in Anquetil-Duperron's French edition of Paulinus a Sancto Barthalomaeo's travels and added them to his work.**In 1825, the French scholar Joseph Daniel**

Guigniaut exclaimed, who has not read the Shakuntala? and wrote about Hindu poetry that the small portion of it with which we are familiar has surprised and impressed all

Europe.(quoted in Oriental Renaissance, 59, 54).

इंग्लैण्ड में इसे पहली बार 1899 में ओर पुनः 1912 और 1913 में इसे पहली बार मञ्चित किया गया तथा इसका अनुवाद **मोनियर विलियम्स** के द्वारा किया गया है। इस प्रकार यूरोप में महाकवि कालिदास के इस नाटक को कई लोगों द्वारा अनुवादित करके मंचित किया गया जिससे विश्वसाहित्य में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' एवं कालिदास का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है।

1888 में मंच पर **जर्मन के म्यूनिक (थियेटर)** में गीति नाट्य (उर्वशी) के रूप में मञ्चित किया गया। इसके पश्चात् मालविकाग्निमित्रम् का केवल अनुवाद ही नहीं अपितु मञ्च पर भी नाट्य मञ्चन हेतु म्यूनिख थियेटर में 1971 में प्रस्तुत किया गया। चीनी में भी शाकुन्तल का भी मञ्चन हुआ है। अमेरिका के **कैलिफ्रोनिया में 'साइक्रोमेनरा'** नामक एक नाटक कम्पनी के द्वारा **'शाकुन्तल'** का सफलतापूर्वक मंचन किया था। इस प्रकार कालिदास के कृतियों का विदेशों में सफलता पूर्वक मञ्चन होना यह सिद्ध करता है कि इनकी कृतियों ने पश्चिमी रङ्गमञ्च को प्रभावित ही नहीं किया अपितु यूरोपीय लोगों को मञ्च के माध्यम से रसास्वादन कराया।

रूस में कालिदास की कृति का प्रभाव–

18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही कृतियों से सम्पर्क करने लगे थे। एक ने 1792 में शाकुन्तल का रूसी अनुवाद प्रकाशित किया। इस अनुवाद में चार थे उन्होंने अनुवाद की भूमिका में एक महत्वपूर्ण बाते लिखी थी। रूस की जनता होमर के प्रति जितना आदर प्रकट करती उतना ही आदर कालिदास को भी दिलवाने के उद्देश्य से करामजिन ने अनुवाद की भूमिका में इस प्रकार लिखा था–होमर और कालिदास मनोहर प्रकृति दृश्यों के चित्तेरे हैं। प्रकृति ने दोनों को लेखनी भेंट की थी।

सन् 1879 में अलारूसी उत्थानों ने सीधे संस्कृत से शाकुन्तल का अनुवाद रूसी में किया था। सन् 1890 में संस्कृत काव्य शीर्षक से वेलोस्की के अनुवाद आये। इसमें शाकुन्तल, रघुवंश एवं मेघदूत के अनुवाद शामिल थे। विख्यात विद्वान **ओल्डन वर्ग** ने कालिदास के तीन नाटकों का अनुवाद रूसी में प्रकाशित किये। इसकी भूमिका में उन्होंने कालिदास के बारें में एक विस्तृत अध्ययन भी लिखा था। रूस के प्रोफेसर रिल्चर ने मेघदूत का अनुवाद उक्रेनी में किया था। कुमारसम्भव और रघुवंशम का अनुवाद भी रिल्चर ने किया। आज भी रूस में भारतीय भाषाओं और संस्कृत के बारे में विस्तृत अध्ययन किये जा रहे हैं। लेनिनग्राड विश्वविद्यालय में कालिदास पर अनुसंधान कार्य चल रहा है।

बोध/अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न–क

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. कालिदास का समय क्या है? (प्रथम सदी/चतुर्थ सदी)
2. कालिदास के पत्नी का क्या नामहै? (विद्योत्तमा/महोत्तमा)

3. कालिदास का नाटक कौन सा नहीं है?(अभिज्ञानशाकुन्तल/विक्रमोर्वशीयम्/मालिविकाग्निमित्रम्/मेघदूत)
4. कालिदास का गीतिकाव्य कौन सा नहीं है? (मेघदूत/ऋतुसंहार/रघुवंशम्)

बोध प्रश्न–ख

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. कालिदास के नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मंचन सर्वप्रथम .....में हुआ था । (इंग्लैण्ड/जर्मनी/)
2. जर्मनी के म्यूनिख थियेटर में मंचन .....हुआ। (विक्रमोर्वशीयम्/अभिज्ञानशाकुन्तलम्)
3. ऋतुसंहार में ..... उल्लेख है। (परिधान/ऋतु)
4. भारतीय विद्या विशेषज्ञ ए. हिल्ब्रेंट ने कालिदास के बारे में एक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखा जिसका शीर्षक ---------- है ।
5. **'शकुन्तला आर द लास्ट रिंग'** नामक अनुवाद..... ने किया ।

बोध प्रश्न–ग

1. महाकवि कालिदास के साहित्य के बारे में विलियम जोन्स का विचार क्या है?

   .....

   .....

   .....

2. महाकवि कालिदास के साहित्य के बारे में स्वामी विवेकानन्द का विचार क्या है?

   .....

   .....

   .....

3. महाकवि कालिदास के साहित्य के बारे में जार्ज फारेस्टर का विचार क्या है?

   .....

   .....

   .....

अभ्यास प्रश्न

1. **महाकवि कालिदास का पश्चिमी रंगमंच पर प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।**

14.5 सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटकों के अतिरिक्त अन्य नाटक और काव्यों का फ्रेंच, जर्मन, लैटिन आदि अनेक विदेशी भाषाओं में अनुवाद करने की होड़ सी लग गई। जर्मनी संस्कृत और प्राच्य विद्याओं के अध्ययन का मुख्य केन्द्र बन गया। इटली, डेनमार्क, स्वीडन, रूस आदि देशों में संस्कृत साहित्य की धाक जम गई। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- महाकवि कालिदास एवं उनके साहित्य से परिचित हुए।
- महाकवि कालिदास का प्रभाव पश्चिमी साहित्य एवं विद्वानों पर किस प्रकार हुआ, उससे परिचित हुआ।
- महाकवि कालिदास के साहित्य का पश्चिमी रंगमंच पर प्रभाव स्पष्ट हुआ।

14.6 शब्दावली

1 मनीषी – विद्वान्
2 परिभू: – चारो ओर व्याप्त
3 स्वयम्भू – स्वयं उत्पन्न होने वाला
4 प्रजापति – ब्रह्मा
5 प्रशंसक – प्रशंसा करने वाला
6 कृतियाँ – रचना
7 यथार्थ – ज्यों का त्यों
8 मानस – मानसिक
9 प्रतिभा – नवीन विषयों को निर्माण करने वाली बुद्धि
10 उद्घाटित – उत्पन्न हुई
11 आकृष्ट – आकर्षित करती हुई

14.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. कालिदास एक अनुशीलन, देवदत्त शास्त्री
2. कालिदास, पं. चुनुवली पाण्डेय
3. कालिदास, वासुदेव विष्णुमिराशी
4. कालिदास का भारत, डॉ. श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 1994
5. कुमारसंभव टीका कालिदास बम्बई, 1966
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम, टीका, कालिदास, डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1993
7. विक्रमोवर्शीयम, टीका, कालिदास
8. मेघदूत टीका, कालिदास, डॉ. शिवराजशास्त्री, साहित्य भण्डार मेरठ, 1989
9. ऋतुसंहार टीका कालिदास, गजेन्द्रगड़कर, बम्बई
10. कालिदास की साहित्य योजना, नैवेध निकेतन वाराणसी 1965
11. कालिदास ग्रन्थावली, पं. सीताराम चतुर्वेदी
12. कालिदास और मेघदूत, डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
13. विश्वपटल पर संस्कृत साहित्य, डॉ. देशराज, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
14. कालिदास आचार्य, महावीर प्रसाद द्विवेदी

15. http://w.w.w/gusenberg.urg>Trandation of Shakintala and other wholes by kalidasa.

16. http://orchire.org>sturean>nikramsvassion kalidasa English Translation Et.conrell/85

14.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–क

(1) प्रथम सदी (2) विद्योत्तमा (3) मेघूदतम् (3) रघुवंशम

बोध प्रश्न–ख

1) अमेरिका

2) विक्रमोर्वशीयम्

3) ऋतु

4) An attempt at a Literay

5) मोनियर विलियम्स

बोध प्रश्न–ग

1 जोन्स ने कालिदास को 'भारत का शेक्सपीयर' कहा था। किन्तु यह ठीक नहीं है। क्योंकि शेक्सपीयर की नाटक प्रतिभा कालिदास को नहीं मिली थी तथा कालिदास की काव्य प्रतिभा शेक्सपीयर को नहीं मिली थी। ऐसा इसलिए कि शेक्सपीयर कवि से भी बढकर नाटककार थे। कालिदास नाटककार से भी बढ़कर कवि थे इसलिए इस प्रकार का तुलनात्मक कहा भी जाय तब भी भारतीय मानस में यथार्थ से तालमेल नहीं बठैगा। किन्तु इस तुलना से प्रत्येक देश की सम्माननीय उच्च प्रतिभा का परिचय भी मिलते है। इसलिए इसे जानना जरुरी है।

2 स्वामी विवेकानन्द ने कालिदास के साहित्य के बारे में कहा है कि–In literature, our epics and poems and drama rank as high as those of any language; ourShaguntala(Shakuntala) was summarized by Germany's greatest poet as heaven and earth united (Complete Works, II, 511-12).

3 **महाकवि कालिदास के साहित्य के बारे में फॉरेस्टर के विचार–**

फॉरेस्टर के अनुवाद को जर्मनी के मध्यवर्ग के बीच बहुत ख्याति मिली थी। उनमें से कई लोग भारतीय विद्या की ओर उन्मुख हो गए। इस प्रकार इसे एक चमत्कार के रूप में देखा गया जो चमत्कार की भूमि से आया था–George Forster(1754-1794) published his very popular English translation of Shakuntala from Jones' English version in 1791. He sent it to Herder on May 17th, 1791(Oriental Renaissance, 57-8). Herder wrote to Forster that Shakuntala was a masterpiece that appears once every two thousand years (Translating the Orient, 13). He also wrote the preface to Forster's second edition. Herder was enchanted by Shakuntala and wanted others to experience his recognition of it as a new model in dramatic theory. He wrote a lengthy essay about Shakuntala, challenging the Aristotelian

dramatic theory by which all dramatic works were evaluated upto that time. Herder also reevaluated his conceptions about Indian art in light of Shakuntala and concluded that the Greek model was not the absolute model in art.(*Samtliche Werke,* cited from *Translating the Orient*, 13-14). Significantly Herder joined the historic Enlightenment and Romantic Movements in Germany

अभ्यास प्रश्न–इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखेंगे।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY